



Rohit kakkar

07 Dec 1980

11:19 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121573401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 07/12/1980
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 11:19:00 घंटे
इष्ट _____: 10:44:32 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 10:57:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:08:28 घंटे
साम्पातिक काल _____: 16:02:30 घंटे
सूर्योदय _____: 07:01:11 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:24:08 घंटे
दिनमान _____: 10:22:57 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 21:42:03 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 26:17:34 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: ज्येष्ठा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: धृति
करण _____: नाग
गण _____: राक्षस
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: नो-नौनिहाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1902	मार्गशीर्ष	16
पंजाबी	संवत : 2037	मार्गशीर्ष	23
बंगाली	सन् : 1387	मार्गशीर्ष	21
तमिल	संवत : 2037	कार्तिक	22
केरल	कोल्लम : 1156	वृश्चिक	22
नेपाली	संवत : 2037	मार्गशीर्ष	22
चैत्रादि	संवत : 2037	मार्गशीर्ष	कृष्ण 15
कार्तिकादि	संवत : 2037	कार्तिक	कृष्ण 15

पंचांग

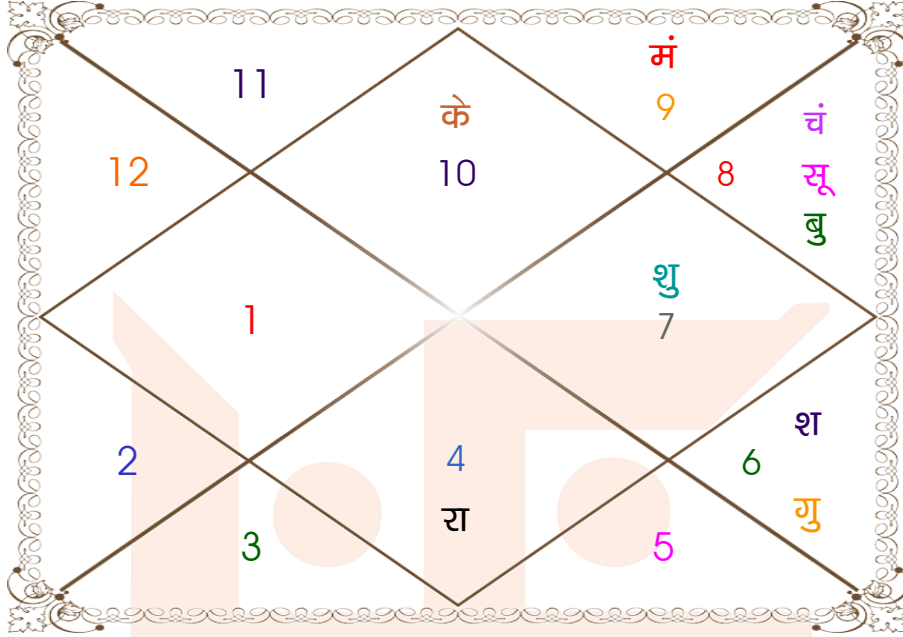
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 15
तिथि समाप्ति काल _____ : 20:05:02
जन्म तिथि _____ : 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 09:34:04 घंटे
जन्म योग _____ : ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : धृति
योग समाप्ति काल _____ : 24:36:07 घंटे
जन्म योग _____ : धृति
सूर्योदय कालीन करण _____ : चतुष्पाद
करण समाप्ति काल _____ : 07:21:16 घंटे
जन्म करण _____ : नाग
भयात _____ : 04:22:19
भभोग _____ : 64:34:49
भोग्य दशा काल _____ : बुध 15 वर्ष 10 मा 8 दि

घात चक्र

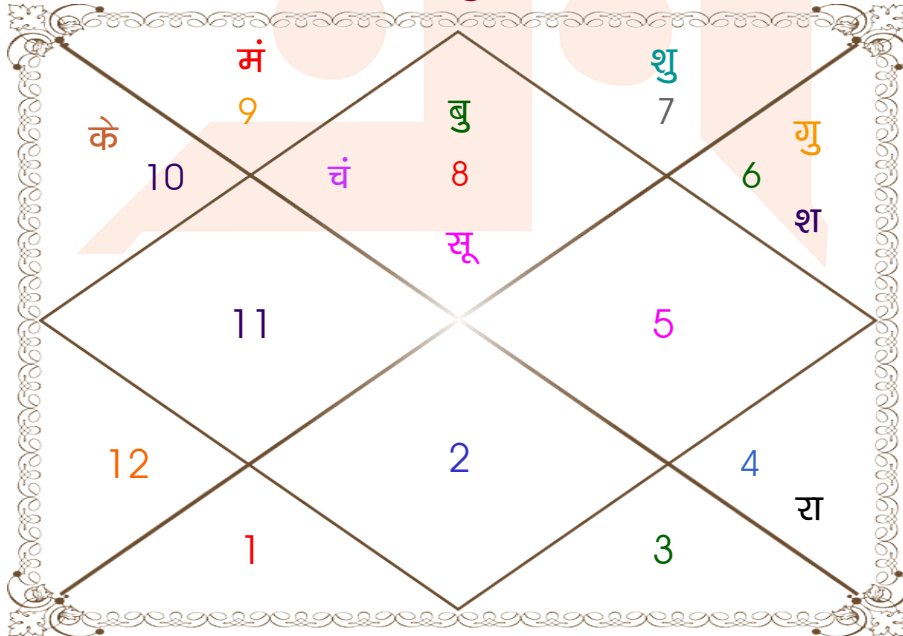
मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : वृष
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

			रा
के ल			
मं	बु सू चं	शु	श गु

लग्न कुंडली

रा		के ल
	शु	मं
गु श		सू चं बु

विंशोत्तरी
बुध 15वर्ष 10मा 8दि
बुध

07/12/1980

16/10/2099

बुध	16/10/1996
केतु	16/10/2003
शुक्र	16/10/2023
सूर्य	16/10/2029
चन्द्र	16/10/2039
मंगल	16/10/2046
राहु	16/10/2064
गुरु	16/10/2080
शनि	16/10/2099

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 7मा 29दि

उल्का

06/08/2021

07/08/2027

उल्का	07/08/2022
सिद्धा	07/10/2023
संकटा	05/02/2025
मंगला	07/04/2025
पिंगला	06/08/2025
धान्या	05/02/2026
भ्रामरी	07/10/2026
भद्रिका	07/08/2027

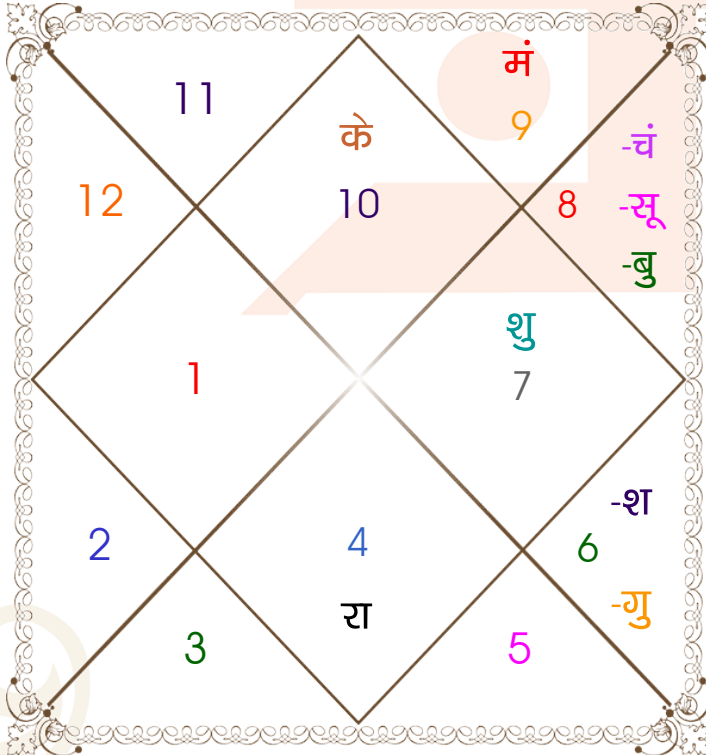
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	26:17:34	454:05:58	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	गुरु	---
सूर्य			वृश्चि	21:42:03	01:00:57	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			वृश्चि	17:33:48	12:18:45	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	नीच राशि
मंगल			धनु	17:59:36	00:46:11	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	मित्र राशि
बुध			वृश्चि	08:34:16	01:31:26	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	सम राशि
गुरु			कन्या	13:19:19	00:08:03	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	22:42:27	01:14:28	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	स्वराशि
शनि			कन्या	14:37:34	00:04:16	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
राहु	व		कर्क	18:51:58	00:10:49	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	18:51:58	00:10:49	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			वृश्चि	03:27:00	00:03:35	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
नेप			वृश्चि	28:32:18	00:02:15	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
प्लूटो			तुला	00:01:22	00:01:40	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	---
दशम भाव			वृश्चि	09:05:57	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	शुक्र	--

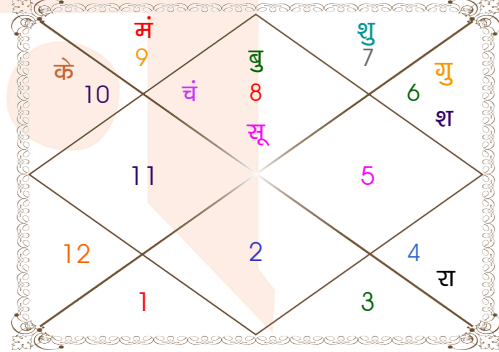
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:35:13

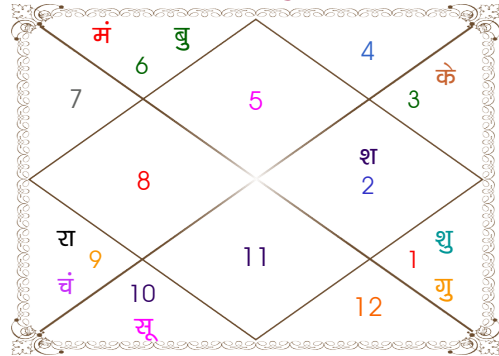
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मकर 13:25:38	मकर 26:17:34
2	कुम्भ 13:25:38	मीन 00:33:42
3	मीन 17:41:46	मेष 04:49:50
4	मेष 21:57:54	वृष 09:05:57
5	वृष 21:57:54	मिथुन 04:49:50
6	मिथुन 17:41:46	कर्क 00:33:42
7	कर्क 13:25:38	कर्क 26:17:34
8	सिंह 13:25:38	कन्या 00:33:42
9	कन्या 17:41:46	तुला 04:49:50
10	तुला 21:57:54	वृश्चिक 09:05:57
11	वृश्चिक 21:57:54	धनु 04:49:50
12	धनु 17:41:46	मकर 00:33:42

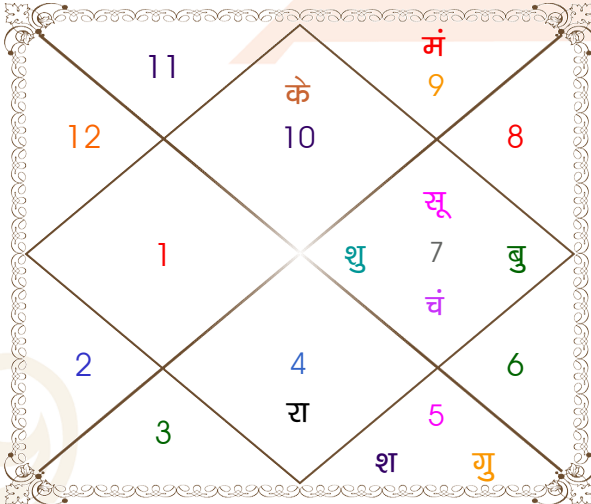
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	26:17:34
2	मीन	07:13:16
3	मेष	11:48:42
4	वृष	09:05:57
5	मिथुन	02:48:12
6	मिथुन	26:54:56
7	कर्क	26:17:34
8	कन्या	07:13:16
9	तुला	11:48:42
10	वृश्चिक	09:05:57
11	धनु	02:48:12
12	धनु	26:54:56

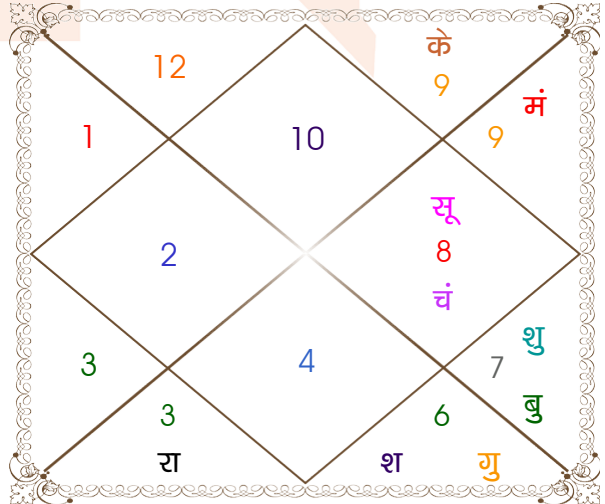
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 15 वर्ष 10 मास 8 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
07/12/1980	16/10/1996	16/10/2003	16/10/2023	16/10/2029
16/10/1996	16/10/2003	16/10/2023	16/10/2029	16/10/2039
बुध 14/03/1982	केतु 14/03/1997	शुक्र 15/02/2007	सूर्य 03/02/2024	चंद्र 16/08/2030
केतु 11/03/1983	शुक्र 14/05/1998	सूर्य 15/02/2008	चंद्र 04/08/2024	मंगल 17/03/2031
शुक्र 09/01/1986	सूर्य 19/09/1998	चंद्र 16/10/2009	मंगल 09/12/2024	राहु 15/09/2032
सूर्य 16/11/1986	चंद्र 20/04/1999	मंगल 16/12/2010	राहु 03/11/2025	गुरु 15/01/2034
चंद्र 16/04/1988	मंगल 16/09/1999	राहु 16/12/2013	गुरु 22/08/2026	शनि 16/08/2035
मंगल 13/04/1989	राहु 03/10/2000	गुरु 16/08/2016	शनि 04/08/2027	बुध 15/01/2037
राहु 01/11/1991	गुरु 09/09/2001	शनि 16/10/2019	बुध 10/06/2028	केतु 16/08/2037
गुरु 05/02/1994	शनि 19/10/2002	बुध 16/08/2022	केतु 16/10/2028	शुक्र 17/04/2039
शनि 16/10/1996	बुध 16/10/2003	केतु 16/10/2023	शुक्र 16/10/2029	सूर्य 16/10/2039

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
16/10/2039	16/10/2046	16/10/2064	16/10/2080	16/10/2099
16/10/2046	16/10/2064	16/10/2080	16/10/2099	00/00/0000
मंगल 14/03/2040	राहु 28/06/2049	गुरु 04/12/2066	शनि 19/10/2083	बुध 08/12/2100
राहु 01/04/2041	गुरु 22/11/2051	शनि 16/06/2069	बुध 29/06/2086	00/00/0000
गुरु 08/03/2042	शनि 28/09/2054	बुध 22/09/2071	केतु 07/08/2087	00/00/0000
शनि 17/04/2043	बुध 16/04/2057	केतु 28/08/2072	शुक्र 07/10/2090	00/00/0000
बुध 13/04/2044	केतु 05/05/2058	शुक्र 29/04/2075	सूर्य 19/09/2091	00/00/0000
केतु 09/09/2044	शुक्र 05/05/2061	सूर्य 15/02/2076	चंद्र 19/04/2093	00/00/0000
शुक्र 09/11/2045	सूर्य 29/03/2062	चंद्र 16/06/2077	मंगल 29/05/2094	00/00/0000
सूर्य 17/03/2046	चंद्र 28/09/2063	मंगल 23/05/2078	राहु 04/04/2097	00/00/0000
चंद्र 16/10/2046	मंगल 16/10/2064	राहु 16/10/2080	गुरु 16/10/2099	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 15 वर्ष 10 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
03/11/2025	22/08/2026	22/08/2026	04/08/2027	04/08/2027	10/06/2028	10/06/2028	16/10/2028	16/10/2028	16/10/2029
गुरु 12/12/2025	शनि 16/10/2026	शनि 16/10/2026	बुध 17/09/2027	बुध 17/09/2027	केतु 17/06/2028	केतु 17/06/2028	शुक्र 15/12/2028	शुक्र 15/12/2028	शुक्र 15/12/2028
शनि 27/01/2026	बुध 04/12/2026	बुध 04/12/2026	केतु 05/10/2027	केतु 05/10/2027	शुक्र 09/07/2028	शुक्र 09/07/2028	सूर्य 03/01/2029	सूर्य 03/01/2029	सूर्य 03/01/2029
बुध 10/03/2026	केतु 25/12/2026	केतु 25/12/2026	शुक्र 26/11/2027	शुक्र 26/11/2027	सूर्य 15/07/2028	सूर्य 15/07/2028	चंद्र 02/02/2029	चंद्र 02/02/2029	चंद्र 02/02/2029
केतु 27/03/2026	शुक्र 21/02/2027	शुक्र 21/02/2027	सूर्य 12/12/2027	सूर्य 12/12/2027	चंद्र 26/07/2028	चंद्र 26/07/2028	मंगल 24/02/2029	मंगल 24/02/2029	मंगल 24/02/2029
शुक्र 15/05/2026	सूर्य 10/03/2027	सूर्य 10/03/2027	चंद्र 07/01/2028	चंद्र 07/01/2028	मंगल 02/08/2028	मंगल 02/08/2028	राहु 19/04/2029	राहु 19/04/2029	राहु 19/04/2029
सूर्य 29/05/2026	चंद्र 08/04/2027	चंद्र 08/04/2027	मंगल 25/01/2028	मंगल 25/01/2028	राहु 21/08/2028	राहु 21/08/2028	गुरु 07/06/2029	गुरु 07/06/2029	गुरु 07/06/2029
चंद्र 22/06/2026	मंगल 28/04/2027	मंगल 28/04/2027	राहु 11/03/2028	राहु 11/03/2028	गुरु 07/09/2028	गुरु 07/09/2028	शनि 04/08/2029	शनि 04/08/2029	शनि 04/08/2029
मंगल 10/07/2026	राहु 19/06/2027	राहु 19/06/2027	गुरु 22/04/2028	गुरु 22/04/2028	शनि 28/09/2028	शनि 28/09/2028	बुध 25/09/2029	बुध 25/09/2029	बुध 25/09/2029
राहु 22/08/2026	गुरु 04/08/2027	गुरु 04/08/2027	शनि 10/06/2028	शनि 10/06/2028	बुध 16/10/2028	बुध 16/10/2028	केतु 16/10/2029	केतु 16/10/2029	केतु 16/10/2029
चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
16/10/2029	16/08/2030	16/08/2030	17/03/2031	17/03/2031	15/09/2032	15/09/2032	15/01/2034	15/01/2034	15/01/2034
16/08/2030	17/03/2031	17/03/2031	15/09/2032	15/09/2032	15/01/2034	15/01/2034	16/08/2035	16/08/2035	16/08/2035
चंद्र 10/11/2029	मंगल 29/08/2030	मंगल 29/08/2030	राहु 07/06/2031	राहु 07/06/2031	गुरु 19/11/2032	गुरु 19/11/2032	शनि 17/04/2034	शनि 17/04/2034	शनि 17/04/2034
मंगल 28/11/2029	राहु 30/09/2030	राहु 30/09/2030	गुरु 20/08/2031	गुरु 20/08/2031	शनि 04/02/2033	शनि 04/02/2033	बुध 08/07/2034	बुध 08/07/2034	बुध 08/07/2034
राहु 13/01/2030	गुरु 28/10/2030	गुरु 28/10/2030	शनि 14/11/2031	शनि 14/11/2031	बुध 14/04/2033	बुध 14/04/2033	केतु 10/08/2034	केतु 10/08/2034	केतु 10/08/2034
गुरु 22/02/2030	शनि 01/12/2030	शनि 01/12/2030	बुध 31/01/2032	बुध 31/01/2032	केतु 13/05/2033	केतु 13/05/2033	शुक्र 15/11/2034	शुक्र 15/11/2034	शुक्र 15/11/2034
शनि 11/04/2030	बुध 31/12/2030	बुध 31/12/2030	केतु 03/03/2032	केतु 03/03/2032	शुक्र 02/08/2033	शुक्र 02/08/2033	सूर्य 14/12/2034	सूर्य 14/12/2034	सूर्य 14/12/2034
बुध 25/05/2030	केतु 12/01/2031	केतु 12/01/2031	शुक्र 02/06/2032	शुक्र 02/06/2032	सूर्य 26/08/2033	सूर्य 26/08/2033	चंद्र 31/01/2035	चंद्र 31/01/2035	चंद्र 31/01/2035
केतु 11/06/2030	शुक्र 17/02/2031	शुक्र 17/02/2031	सूर्य 30/06/2032	सूर्य 30/06/2032	चंद्र 06/10/2033	चंद्र 06/10/2033	मंगल 06/03/2035	मंगल 06/03/2035	मंगल 06/03/2035
शुक्र 01/08/2030	सूर्य 28/02/2031	सूर्य 28/02/2031	चंद्र 14/08/2032	चंद्र 14/08/2032	मंगल 03/11/2033	मंगल 03/11/2033	राहु 31/05/2035	राहु 31/05/2035	राहु 31/05/2035
सूर्य 16/08/2030	चंद्र 17/03/2031	चंद्र 17/03/2031	मंगल 15/09/2032	मंगल 15/09/2032	राहु 15/01/2034	राहु 15/01/2034	गुरु 16/08/2035	गुरु 16/08/2035	गुरु 16/08/2035
चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
16/08/2035	15/01/2037	15/01/2037	16/08/2037	16/08/2037	17/04/2039	17/04/2039	17/04/2039	16/10/2039	16/10/2039
15/01/2037	16/08/2037	16/08/2037	17/04/2039	17/04/2039	16/10/2039	16/10/2039	16/10/2039	14/03/2040	14/03/2040
बुध 29/10/2035	केतु 27/01/2037	केतु 27/01/2037	शुक्र 25/11/2037	शुक्र 25/11/2037	सूर्य 26/04/2039	सूर्य 26/04/2039	मंगल 25/10/2039	मंगल 25/10/2039	मंगल 25/10/2039
केतु 28/11/2035	शुक्र 04/03/2037	शुक्र 04/03/2037	सूर्य 26/12/2037	सूर्य 26/12/2037	चंद्र 11/05/2039	चंद्र 11/05/2039	राहु 16/11/2039	राहु 16/11/2039	राहु 16/11/2039
शुक्र 22/02/2036	सूर्य 15/03/2037	सूर्य 15/03/2037	चंद्र 15/02/2038	चंद्र 15/02/2038	मंगल 22/05/2039	मंगल 22/05/2039	गुरु 06/12/2039	गुरु 06/12/2039	गुरु 06/12/2039
सूर्य 19/03/2036	चंद्र 01/04/2037	चंद्र 01/04/2037	मंगल 22/03/2038	मंगल 22/03/2038	राहु 18/06/2039	राहु 18/06/2039	शनि 30/12/2039	शनि 30/12/2039	शनि 30/12/2039
चंद्र 01/05/2036	मंगल 14/04/2037	मंगल 14/04/2037	राहु 21/06/2038	राहु 21/06/2038	गुरु 12/07/2039	गुरु 12/07/2039	बुध 20/01/2040	बुध 20/01/2040	बुध 20/01/2040
मंगल 31/05/2036	राहु 16/05/2037	राहु 16/05/2037	गुरु 11/09/2038	गुरु 11/09/2038	शनि 10/08/2039	शनि 10/08/2039	केतु 29/01/2040	केतु 29/01/2040	केतु 29/01/2040
राहु 17/08/2036	गुरु 13/06/2037	गुरु 13/06/2037	शनि 16/12/2038	शनि 16/12/2038	बुध 05/09/2039	बुध 05/09/2039	शुक्र 23/02/2040	शुक्र 23/02/2040	शुक्र 23/02/2040
गुरु 25/10/2036	शनि 17/07/2037	शनि 17/07/2037	बुध 12/03/2039	बुध 12/03/2039	केतु 16/09/2039	केतु 16/09/2039	सूर्य 01/03/2040	सूर्य 01/03/2040	सूर्य 01/03/2040
शनि 15/01/2037	बुध 16/08/2037	बुध 16/08/2037	केतु 17/04/2039	केतु 17/04/2039	शुक्र 16/10/2039	शुक्र 16/10/2039	चंद्र 14/03/2040	चंद्र 14/03/2040	चंद्र 14/03/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

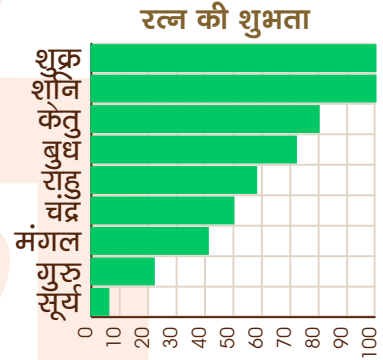
मूलांक	7
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 1
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
नीलम	शनि	100%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, धन
लहसुनिया	केतु	80%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
पन्ना	बुध	72%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
गोमेद	राहु	58%	दम्पति, धनार्जन
मोती	चंद्र	50%	धनार्जन, दम्पति
मूंगा	मंगल	41%	व्यय, ग्रह कलेश, हानि
पुखराज	गुरु	22%	नेष्ट भाग्य, व्यय, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	6%	हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	16/10/1996	19%	25%	41%	84%	22%	100%	100%	58%	80%
केतु	16/10/2003	0%	25%	52%	72%	22%	100%	92%	41%	92%
शुक्र	16/10/2023	0%	25%	41%	78%	22%	100%	100%	64%	86%
सूर्य	16/10/2029	31%	56%	52%	72%	34%	92%	92%	41%	67%
चंद्र	16/10/2039	19%	62%	41%	78%	22%	100%	100%	41%	67%
मंगल	16/10/2046	19%	56%	58%	59%	34%	100%	100%	41%	86%
राहु	16/10/2064	0%	25%	16%	72%	22%	100%	100%	70%	67%
गुरु	16/10/2080	19%	56%	52%	59%	47%	92%	100%	58%	80%
शनि	16/10/2099	0%	25%	16%	78%	22%	100%	100%	64%	67%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

व्यावसायिक उन्नति
अल्प बचत
कम खर्च
धन
शत्रु व रोग

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति जन्म कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्ययशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही आप अधिकांश व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही विवाह के पश्चात भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रेम पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में समस्त आवश्यक सुख संसाधनों तथा अन्य भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे। आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा अतः इनसे आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा रुचिशील रहेंगे तथा समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में सफल रहेंगे। इसकी तृतीय भाव पर दृष्टि से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होगी तथा आप निर्भय होकर अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगे। जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। षष्ठ भाव पर दृष्टि होने से शत्रु पक्ष प्रायः

निर्बल रहेगा। आपका विरोध करने में वे सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ ही रहेगी। इससे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भी समावेश होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी तथा आपके परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा एवं अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याओं का प्रायः अभाव रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में पूर्ण यश प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के समय यदि कन्या के द्वादश भाव में मंगल हो तो आवश्यक होने पर ही विवाह करें क्योंकि समान भावों में मंगल होने से जीवन में यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में स्थित मंगल होने से दोष समाप्त हो जायेगा एवं जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः अन्तिम निर्णय अत्यन्त ही सूझ बूझ से लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को पैतृक धन सम्पत्ति का अभिलषित फल प्रायः प्राप्त नहीं होता है। पैतृक सम्पत्ति को या तो दान दे देता है या आंशिक रूप में नुकसान हो जाता है। प्रेम प्रसंग में आंशिक असफलता होती है एवं गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं और वे समय-समय पर पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। जातक को साझेदारी के काम में नुकसान मिलता है।

इस योग के कारण जातक लालची प्रवृत्ति के, लाटरी, जुआ, सट्टा आदि के शैकीन हो जाते हैं। बनते कार्यों में थोड़ी बहुत रुकावटें आती हैं। कभी-कभी बड़ा पद मिलते-मिलते रह जाता है। किसी न किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती। जातक को प्रायः पुत्र सन्तान का अभाव रहता है तथा कन्या से मानसिकता जुड़ती नहीं है। ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

इस योग के प्रभाव से इन्द्रिय जन्य गुप्त रोग जीवन में कभी-कभी परेशान करते रहते हैं। दूसरों को दिया हुआ पैसा प्रायः वापस नहीं आता है। फलस्वरूप जातक की आर्थिक स्थिति आंशिक रूप में नाजुक हो जाती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।

10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, चन्द्र और बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, कूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मूर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान् एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्,

भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्यकर्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराकमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(16/10/2023 - 16/10/2029)

सूर्य की महादशा 16/10/2023 को आरंभ और 16/10/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में अवस्थित है। सूर्य सम्पत्ति, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि एकादश भाव सभी प्रकार के लाभ, मनोकामनाओं की पूर्ति, शिक्षा तथा भौतिक सुखों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपको धन, प्रभावशाली मित्रों, पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में रोगों की प्रतिरोध शक्ति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए आपको सात्विक और सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और हृदयगति की पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अतिशयता का परित्याग करना चाहिए और जीवन के प्रति आपकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ताकि इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रह सके।

अर्थ :

आप भाग्यशाली होंगे और आपको पर्याप्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होंगे। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको पिता से लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अधिक प्रयास किये बगैर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। दशा ज्यों-ज्यों प्रगति करेगी त्यों-ज्यों आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। किन्तु, आपको फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि आप स्वभाव से उदार हैं।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता और लाभ मिलेंगे। आपको अधिक परिश्रम किये बगैर सफलता मिलेगी। आप सरकारी सेवा में अच्छा करेंगे। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों और संस्थानों में प्रबंधक के पद के लिये सर्वाधिक योग्य हैं। संगठन से सम्बद्ध कोई भी कार्य आपके अनुकूल होगा। रत्नों का व्यवसाय अथवा सम्पत्ति की परिरक्षा का कार्य लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोगों के कार्य-स्थान में वातावरण सौहार्द्रपूर्ण रहेगा, उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग तथा उच्चधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को स्व-प्रयास से धन तथा लाभ की प्राप्ति होगी। रत्न-आभूषण, धातु तथा बिजली के सामानों आदि के व्यापारियों के लिये यह दशा लाभदायक होगी।

परिवार :

आपका बच्चों से गहरा लगाव है। आपको उनसे अत्यधिक सुख मिलेगा। इस दशा-काल में आप उनके ऊपर बड़ी सीमा तक निर्भर करेंगे। आपके जीवन साथी के साथ आपके सम्बन्ध बहुत मधुर होंगे। आपके जीवन साथी को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और उनका भाग्योदय होगा। आपकी माता को किसी अप्रत्याशित धन की प्राप्ति और धर्मशास्त्रों में

उनकी रुचि हो सकती है। आपके पिता स्वयं धनोपार्जन करेंगे, प्रसन्न रहेंगे और छोटी यात्राओं पर जाएंगे। आपके भाई-बहनों के लिये यह समय समृद्धिशाली रहेगा और आपके साथ उनके संबंध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपका अध्ययन उत्तम होगा और आप भौतिकी, ललित कला आदि में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। प्रशासकीय पाठ्यक्रमों और राजनीतिक इतिहास में आपकी रुचि होगी।



**अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
(03/11/2025 - 22/08/2026)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 16/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 03/11/2025 को प्रारंभ होकर 22/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आप सुख-समृद्धि और मान-सम्मान से युक्त रहेंगे। लंबी यात्रा, ज्ञान प्राप्ति या अध्यापन के अवसर मिलेंगे। किसी विशेष विषय में रुचि उत्पन्न हो सकती है। संतान से सुख, सहायता प्राप्त होंगे। सट्टेबाजी और निवेश से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। समाज और व्यापार जगत में सम्मान मिलेगा।

जीवनसाथी की इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, मुकदमे में विजय होगी। आपके पिता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों को धनलाभ होगा, भागीदारी होगी और समृद्धि आएगी। आपकी संतान की कार्यशक्ति उत्तम रहेगी और शिक्षा उत्तम होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनसंचय करेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे और यात्राएं होंगी। व्यापारी भाग्यवान रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कूल्हे की व्याधि, ज्वर और बदहजमी से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः

**अंतर्दशा :- सूर्य - शनि
(22/08/2026 - 04/08/2027)**

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 22/08/2026 को प्रारंभ होगी और 04/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको किसी लंबी यात्रा से लाभ हो सकता है। संतान और छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी। लेखन से धन आ सकता है। यात्रा, उपहार, दान में धन व्यय हो सकता है। शत्रुओं पर विजय होगी। मातहतों एवं सहकर्मियों का सहयोग मिलता रहेगा।

जीवनसाथी को परिश्रम करना होगा। पिता का समय भाग्यशाली और समृद्ध रहेगा। उनके आपके साथ संबंध मधुर रहेंगे। माता का समय सामान्यतः उत्तम रहेगा; उन्हें मामूली स्वास्थ्य-समस्या हो सकती है। भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे। आपकी संतान सुखी होगी और आपको सुख देगी।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ होगा, मित्र बनेंगे, उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यर्थ की यात्राएं होंगी। व्यापारियों के लिए कुछ परिवर्तन

का योग है।

स्नायुतंत्र, पैरों की व्याधि या गठिया से बचाव करें। अरिष्ट से बचने के लिए भैरव के रूप में शिवजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - बुध
(04/08/2027 - 10/06/2028)**

आपकी सूर्य की महादशा 16/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 04/08/2027 को प्रारंभ होकर 10/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ मिलेगा। संतुष्टि, धन और सुख की प्राप्ति होगी। आपको महत्वपूर्ण उपलब्धि हो सकती है। आशाओं और कर्तव्यों की पूर्ति होगी। आपको धन, सम्मान और उच्चाधिकारियों से प्रशंसा की प्राप्ति होगी। सट्टेबाजी और निवेश से लाभ होगा। ललित कलाओं में रुचि होगी। ज्ञानार्जन द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। आपको दक्षता वाले खेल, नाटक और बाल मनोविज्ञान में रुचि हो सकती है। बच्चों से सुख मिलेगा। आप सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। वेदविज्ञान ओर मंत्रसिद्धि में मन लग सकता है।

व्यापार में साझेदार को सट्टेबाजी और निवेश से लाभ हो सकता है। पिता को संचार माध्यम से लाभ होगा। माता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है। भाई-बहनों को यात्रा, घरेलू सुख और धन के लाभ की संभावना है। आपकी संतान का समय सौभाग्यशाली रहेगा। सेवारत जातकों को अनुबंधों से लाभ होगा, विरोधियों पर सफलता मिलेगी, उच्चाधिकारियों से सहयोग और उत्तम कार्यालय आदि की संभावना है। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारीगण व्यस्त रहेंगे।

कान, पैर, घुटनों की देखभाल करें। भावनात्मक समस्याओं से बचें। शुभत्व की वृद्धि के लिए हरी वस्तुओं का दान करें।

**अंतर्दशा :- सूर्य - केतु
(10/06/2028 - 16/10/2028)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 16/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/06/2028 को आरंभ होकर 16/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

आप में उच्चकोटि का अंतर्ज्ञान है। इसका प्रयोग परोपकार हेतु करना श्रेयस्कर रहेगा। दांपत्य जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। पारिवारिक शांति को भंग न होने दें। व्यर्थ की यात्राओं से बचें।

जीवनसाथी को प्रतिस्पर्धियों से कुछ समस्या हो सकती है। आपके पिता को

**महादशा :- चन्द्र
(16/10/2029 - 16/10/2039)**

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 16/10/2029 को आरंभ और 16/10/2039 को समाप्त होगी।

चन्द्र एकादश भाव में स्थित है और इसे प्रबल कर रहा है। अतः इस दशा काल में आपका जीवन स्वस्थ, सुखमय, शान्तिपूर्ण तथा समृद्धिशाली रहेगा। चन्द्र के कारण आपकी चहुमुखी प्रगति होगी क्योंकि एकादश भाव समाज, प्रियपात्र, आकांक्षाओं, मनोकामनाओं और उनकी पूर्ति, कार्यों में सफलता, आय, समृद्धि और भाग्योदय का प्रतीक है।

स्वास्थ्य :

दशा स्वामि चन्द्र के कारण इस अवधि में आपका जीवन सुखमय, और उत्तम



रहेगा। इस दशा में किसी बड़े रोग या दुर्घटना की संभावना नहीं है और आपका जीवन सुखमय व स्वस्थ होगा और आप अपने कार्यों का सम्पादन सामान्य ढंग से अच्छी तरह करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र दशा की अवधि में आप लाभ अर्जित करेंगे जिससे आपका सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। सम्पत्तियों और बैंक बैलेंस में वृद्धि होगी।

व्यवसाय :

व्यावसायिक दृष्टि से भी यह दशा आपके लिए उत्तम रहेगी। आपको अनेक लाभ के संकेत हैं जो इस बात के सूचक हैं कि आप जीवन में बहुत तरक्की करेंगे। यदि आप सेवारत हैं तो पदोन्नति के पर्याप्त अवसर मिलेंगे और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके व्यवसाय का विस्तार होगा जिससे अपने क्षेत्र व सामाजिक जीवन में और मित्रों के बीच लोकप्रिय होंगे।

पारिवारिक जीवन :

दशा आपके पारिवारिक जीवन के लिए भी उत्तम है। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय होगा और आपको पत्नी, घर, बच्चों तथा सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। आपके सामाजिक क्षेत्र का विस्तार होगा और भाइयों तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग से परिवार को लाभ होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यदि आप शैक्षिक-वृत्ति में नहीं हैं तो आपका धर्मग्रन्थों व पुराणों के अध्ययन की ओर झुकाव होगा।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(16/10/2029 - 16/08/2030)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 16/10/2029 को प्रारंभ होकर 16/10/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 16/10/2029 को प्रारंभ होकर 16/08/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में एकादश भाव में स्थित है, जहां से पंचम भाव पर उसकी दृष्टि है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। यह आय का भाव माना जाता है।

इस अवधि में आप बहुत भाग्यशाली रहेंगे। दान, धर्म और समाज सेवा में आपकी रुचि रहेगी। आपका सम्मान होगा। जीवन को आनंदमय बनाने वाले सुखसाधन आपको प्राप्त होंगे। समाज में लोकप्रियता बढ़ेगी; धन संचय भी होगा। साख्र बढ़ने से आप में नम्रता की वृद्धि होगी।

शुभत्व में वृद्धि और मानसिक शांति के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। चन्द्रोदय के समय चंद्र मंत्र का जाप करते हुए चंद्रमा को कच्चा दूध अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
(16/08/2030 - 17/03/2031)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 16/10/2029 को प्रारंभ होकर 16/10/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 16/08/2030 को प्रारंभ होकर 17/03/2031 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 3, 6, 7 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आंखों की दृष्टि कमजोर हो सकती है, क्रोध अधिक होगा, झगड़ालू प्रवृत्ति हो सकती है, फिजूलखर्ची बढ़ सकती है। आपके गुप्त शत्रु हो सकते हैं। आप भी दूसरों के गुप्त शत्रु हो सकते हैं। आप स्वार्थी हो सकते हैं, नफरत की भावना बलवती होगी। धन की हानि हो सकती है। कोई व्यक्ति धोखा दे सकता है। सहकर्मियों से सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।